

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : लोक-संस्कृति और जीवन दर्शन

जन्माष्टमी के दिन हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों ही अंचलों में व्रत रखने की एक अत्यंत कठोर और पवित्र लोक परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्रद्धालु दिनभर निर्जला या फलाहारी व्रत का संकल्प लेते हैं और जैसे-जैसे भादों की अंधेरी रात में मध्यरात्रि के बारह बजने का समय करीब आता है, हर घर और मंदिर में एक अलौकिक प्रतीक्षा का भाव छा जाता है।



पर्व

आँचल शर्मा

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब वर्षा ऋतु अपने चरम पर होती है और हरियाली से धरती का कोना-कोना खिल उठता है, तब हरियाणा का जनमानस एक अद्भुत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उल्लास में डूब जाता है। हरियाणा में योगेश्वर की उपासना का समय आता है, जिसने इस पावन भूमि को केवल एक ऐतिहासिक युद्धभूमि नहीं, बल्कि धर्मभूमि का अमर गौरव प्रदान किया। जन्माष्टमी का यह पर्व हरियाणा के लिए केवल एक देवता के जन्म का उत्सव नहीं है, बल्कि यह उस महान मार्गदर्शक के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है, जिसने कुरुक्षेत्र की माटी को पूरे विश्व के लिए ज्ञान, दर्शन और निष्काम कर्म का शाश्वत केंद्र बना दिया।हरियाणा के लोक-जीवन और सांस्कृतिक जड़ों में श्रीकृष्ण की उपस्थिति को देखते हैं तो वह अत्यंत सहज और आत्मीय प्रतीत होती है।

हरियाणा की लोक-संस्कृति, साहित्य और संगीत में कृष्ण कथाओं का अत्यंत प्रामाणिक और



समुद्ध इतिहास रा गया है। प्रदेश की सबसे सशक्त लोक नाट्य शैली—सांग और रागिनी परंपरा में कृष्ण के जीवन प्रसंगों, कुरुक्षेत्र के युद्ध और गीता के उपदेश का बहुत ही मार्मिक वर्णन मिलता है। पंडित लखमीचंद, बाजे भगत और मांगे राम जैसे महान लोक-कवियों की समृद्ध वाचिक परंपरा ने अपनी रागनियों के माध्यम से श्रीकृष्ण की लीलाओं और गीता के दार्शनिक ज्ञान को जन-जन की भाषा में ढालकर ग्रामीण चौपालों तक पहुंचाया है। हरियाणा की इसी सांग-परंपरा की एक अत्यंत लोकप्रिय और ओजस्वी रागिनी में गीता के उपदेश का सार बहुत ही सीधे शब्दों में गाते हुए कहा गया है कि 'बाजे शंख नगाड़े भारी कुरुक्षेत्र के मैदान में, कृष्ण जी ने गीता गाई अर्जुन के सुध ज्ञान में।' जब ग्रामीण मंचों पर लोक-कलाकार इन रागनियों को पूरी तल्लीनता से गाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो कृष्ण कोई दूरस्थ देवता नहीं, बल्कि हरियाणा की इसी धरती पर खड़े एक जीवंत मार्गदर्शक हों।लोक-साहित्य की वास्तविक आत्मा उसकी इसी वाचिक परंपरा में निवास करती है, जहां किसी रचना की प्रामाणिकता मुद्रित पृष्ठों से नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही सामूहिक श्रुति-स्मृति से सिद्ध होती है। इसी निर्बाध प्रवाह में, हरियाणा के ग्रामीण अंचलों, विशेषकर बांगर

और खादर क्षेत्रों के रतजगों में, जन्माष्टमी के अवसर पर महिलाओं द्वारा समवेत स्वर में गाए जाने वाले 'जकड़ी', 'पंगट' और 'सोहर' गीत इस वाचिक परंपरा के सबसे प्रामाणिक साक्ष्य बनकर उभरते हैं। इन जकड़ियों में पौराणिक प्रामाणिकता को और अधिक पुष्ट करते हैं।हरियाणवी लोक-दर्शन की एक और बड़ी विशिष्टता ईश्वर के साथ स्थापित होने वाला 'सखा भाव' है, जो माखन चोरी और उलाहना जकड़ियों में बड़ी प्रखरता से मुखर होता है। इन उलाहना गीतों में गोपियां कृष्ण की नटखट हरकतों की शिकायत करते हुए पूरी निश्छलता से गाती हैं: *काली कमली आळा मेरा, मन हर के लेंगा री। मैं तो गई थी जमुना जल भरण नै, मेरी मटक की फोड़ के लेया री। सासरिये में सुगै सास मेरी, मैं तो हो गई आण-निताणी री।* इन पंक्तियों में सास के तानों का भय और 'आण-निताणी' (असहाय) होने का जो भोलापन झलकता है, वह हरियाणवी ग्रामीण परिवेश के सहज मनोविज्ञान को दर्शाता है। ये उलाहना जकड़ियां रास-गीतों के साथ-साथ जन्माष्टमी के जगणियों का अभिनंग रही हैं। इन जकड़ियों के रचयिता भले ही पूर्णतः अज्ञात हों, परंतु 'आळा', 'ल्याय', 'चालैं' जैसी ठेठ क्षेत्रीय शब्दावली ही इनकी वास्तविक कसौटी है। ये किसी आधुनिक

मंदिर दो और मूर्ति एक

झज्जर जिले के बेरी कस्बा में दो मंदिर हैं और इनमें रखी जाने वाली माता भीमेश्वरी देवी की मूर्ति एक ही है। बताते हैं कि प्रारंभ में इस जगह पर घना जंगल था। इसमें ऋषि दुर्वासा रह रहे थे। ऋषि दुर्वासा रोजाना सुबह माता भीमेश्वरी देवी की मूर्ति को बाहरी मंदिर में लाते और दोपहर बाद मूर्ति को भीतरी मंदिर में रख देते थे। मूर्ति को आंतरिक मंदिर से बाहरी मंदिर तक ले जाने की यह प्रक्रिया अभी भी धार्मिक रूप से पालन की जा रही है।

जन्माष्टमी पर हरियाणा के घरों में खीरे को काटकर उसमें से बाल कृष्ण की मूर्ति को प्रतीकात्मक रूप से जन्म दिलाने की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है, जिसे लोक-विश्वास में 'नाल छेदन' का प्रतीक माना जाता है।

गीतकार की बंद कमरे में रची गई कविताएं नहीं हैं, अपितु ये हरियाणा की मिट्टी से उपजी वे ध्वनियां हैं, जिन्होंने भगवान को स्वर्ग के सिंहासन से उतारकर सीधे गांव की चौपाल और घर के आंगन का हिस्सा बना दिया है। व्रत और अनुष्ठानों की दृष्टि से देखा जाए तो, जन्माष्टमी के दिन हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों ही अंचलों में व्रत रखने की एक अत्यंत कठोर और पवित्र लोक परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्रद्धालु दिन भर निर्जला या फलाहारी व्रत का संकल्प लेते हैं और जैसे-जैसे भादों की अंधेरी रात में मध्यरात्रि के बारह बजने का समय करीब आता है, हर घर और मंदिर में एक अलौकिक प्रतीक्षा का भाव छा जाता है। जैसे ही चांद निकलता है तो शंखों की ध्वनि और नगाड़ों की गूंज के साथ वतावरण 'नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की' के जयकारों से भर उठता है। इस जन्म के अवसर पर हरियाणा के घरों में खीरे को काटकर उसमें से बाल कृष्ण की मूर्ति को प्रतीकात्मक रूप से जन्म दिलाने की एक अनूठी परंपरा देखने को मिलती है, जिसे लोक-विश्वास में 'नाल छेदन' का प्रतीक माना जाता है। जन्म के तुरंत पश्चात बालगोपाल का पंचामृत से पवित्र अभिषेक कराया जाता है और उद्धे नंद रेशमी वस्त्र पहनाकर श्रद्धापूर्वक झुला झुलाया जाता है। चूंकि कृष्ण को गोपाल कहा जाता है और हरियाणा मूलतः पशुपालकों का प्रदेश है, इसलिए जन्माष्टमी पर यहां के खान-पान और भगवान के नैवेद्य में विशेष शुद्धता और देसी स्वाद झलकता है। ताजी मथी हुई छाछ से निकले सफेद मक्खन, मिश्री, देसी घी के चूरमे, धनिया के

पंजीरी और दूध को कढ़ाकर बनाए गए पेड़े विशेष रूप से अर्पित किए जाते हैं। इसके साथ ही, लोक-विश्वास के अंतर्गत इस दिन गोसेवा का विशेष विधान है, जहां लोग अपनी गांयों को स्वच्छ जल से नहलाकर सजाते हैं, हरा चारा खिलाते हैं और माथे पर रोली का तिलक लगाकर आरती उतारते हैं। प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण इस पर्व के स्वरूप में भी थोड़ी भिन्नता दिखाई देती है। हरियाणा के दक्षिणी हिस्से, विशेषकर पलवल, होडल, फरीदाबाद और नूंह के जो क्षेत्र ब्रज भूमि से सटे हुए हैं, वहां रासलीला मंडलियों और ब्रज शैली के कीर्तनों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। इसके विपरीत, चूंकि भगवान कृष्ण को एक महान मल्ल भी माना जाता है, इसलिए फरीदाबाद के धारिण जैसे कई गांवों में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विशेष मेलों और कुश्ती के दंगलों का आयोजन किया जाता है। हरियाणा में कृष्ण और जन्माष्टमी की चर्चा कुरुक्षेत्र के बिना सर्वथा अधूरी है। यह केवल एक भौगोलिक स्थान मात्र नहीं है, बल्कि यह मानव के आत्मसंघर्ष की वह भूमि है, जहां मनुष्य अपने कर्तव्य और सांसारिक मोह के बीच खड़ा होता है। कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में उसी ऐतिहासिक अक्षय वट के नीचे जन्माष्टमी पर विशेष आध्यात्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। यहां कृष्ण केवल जलशयोक्ति के नंदलाल नहीं रहते, बल्कि वे एक गंभीर योगेश्वर के रूप में पूजे जाते हैं। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया कर्म का यह संदेश हरियाणा के मेहनतकश समाज के जीवन-दर्शन से हृबहू मेल खाता है। मौसम की परवाह किए बिना खेत में पसीना बहाने वाला किसान हो या देश की सीमाओं पर डटा हरियाणा का जवान, निष्काम कर्म की जो भावना गीता में बताई गई है, वह हरियाणवी जनमानस के स्वभाव में प्राकृतिक रूप से रची-बसी है। जब किसी गांव की चौपाल से कृष्ण की रागनी की कोई पुरानी तान सुनाई देती है या जब कोई महिला अपने घर के आंगन में कान्हा की छठी के गीत गाती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि हजारों वर्ष पुरानी वह अलौकिक कथा आज भी हरियाणा की मिट्टी में सांस ले रही है। हरियाणा में श्रीकृष्ण केवल भगवान नहीं हैं, वे इस प्रदेश की आत्मा में रचे-बसे एक शाश्वत मार्गदर्शक हैं।

ग़ज़ल	कर्मचंद केसर	
कुछ ना सै		
गन्दा - मन्दा फूहड़ गाणा कुछ ना सै। लय सुर ताल बिना मुँह बाणा कुछ ना सै। मतलब खातर हाथ मित्याणा कुछ ना सै। अपणी बोर - बड़याई गाणा कुछ ना सै। रिश्तेदारी हो सै प्यारी बरतण की, बात-बात पै खुँड बजाणा कुछ ना सै। सुलफा गाँऊआ मॉंग धतूरा फीम बुरी, दारु का बी पीणा-प्याणा कुछ ना सै। बटळी करले चै कितनी धन-माया तौ, उरियो रहजु गेल्लै जाणा कुछ ना सै। बाँगगे-बोलेते च्यार डोंकटे लिखकै बस, अखबारों में नाम छपाणा कुछ ना सै। फास्ट फूड अर् लटरम-पटरम खावै लोग, होटल का बी ताजा खाणा कुछ ना सै। चाल-चलन में खोट मगन मोह माया मैं, सिर टोप्पी चै भगवौ बाणा कुछ ना सै। जूत लगेँ और मिलें मिट्ठ्याई खावण नैं, केसर इसी जगौ पै जाणा कुछ ना सै।		

ग़ज़ल	रामफल गौड	
मान मरे सै		

जिस माणस का मान मरे सै। जिन्दा ओ इनसान मरे सै। बेदोस्सी नै सजा मिलै तो, न्यूँ समझो संविधान मरे सै। मात पिता हों मरे बराब्बर, जिनका पूत जवान मरे सै। खड़जंग माट्ठे सै जिस घर म्हं, बच्चों की मुस्कान मरे सै। ओ जिन्दा बी मरे बराब्बर, जिसका दीन ईमान मरे सै। खेत रोवते बिलख बिलख जिव, तंगवी भोग किसान मरे सै। जात धरम पै कतल हुवै जिव, मणसपणे कां ग्यान मरे सै। खतम हुवै सै वा संसकिरती, जिसकी मूल जबांन मरे सै। मोत मणस की इब न्यूँ रामफल, सरइय पै ज्यूँ स्वान मरे सै।

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

बालपन

आनंद को खोजने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं, वह हमारे अतीत की किसी 'खोही' में भी छिपा हो सकता है

याद आता है बचपन की 'खोही' और बारिश में भीगा हुआ आनंद

लोकजीवन

रवि यादव

भले ही आज जमाना बहुत बदल गया है, सुविधाएं बढ़ गई हैं और जीवन की रफ्तार पहले से कहीं तेज हो गई है, लेकिन बचपन की कुछ यादें ऐसी होती हैं, जो समय के साथ धुंधली नहीं पड़ती। वे अचानक किसी दृश्य, किसी वस्तु, किसी खुशबू या बारिश की किसी बूंद के साथ फिर से हमारे सामने आ खड़ी होती हैं। ऐसी ही एक याद है - हमारे बचपन की 'खोही' या 'खोली'। आज की पीढ़ी शायद इस शब्द से परिचित न हो, लेकिन हमारे जैसे लोगों के लिए 'खोही' केवल सुतली से बनी बोरी नहीं थी और न ही प्लास्टिक से बना खाद का कट्टा था। वह खोही हमारे बचपन का हिस्सा थी, हमारी शरातों की साथी थी और कभी-कभी तो हमारे लिए छतरी का काम भी करती थी। मुझे आज भी याद है कि हमारे स्कूलों में उस समय टाट-पट्टी पर्याप्त संख्या में नहीं हुआ करती थी। इसलिए हम घर से सुतली से बनी बोरी या प्लास्टिक का कट्टा लेकर स्कूल जाया करते थे। स्कूल पहुंचते ही सबसे पहला काम होता था अपनी परांद की जगह तयशाना। जैसे ही जगह मिलती, हम अपनी बोरी वहां बिछा देते और उस पर अपना बस्ता रख देते थे। धीरे-धीरे वह जगह हमारे लिए किसी छोटे से 'प्लाट' की तरह हो जाती थी। मन में एक अदृश्य बोर्ड टंगा होता था - "यह मेरी जगह है, यहां कोई नहीं बैठेगा।" अगर कोई

दूसरा बच्चा हमारी जगह पर बैठ जाता तो मामला लगभग जमीन के विवाद जैसा ही जाता था। दोस्तों अपनी जगह थी, लेकिन अपनी बोरी और अपनी जगह की हिफाजत उससे भी बड़ी जिम्मेदारी हुआ करती थी। उस समय हमारे पास आज जैसी सुविधाएं नहीं थीं,

लेकिन खुशियां बहुत थीं। साधन सीमित थे, मगर कल्पनाएं असीमित थीं। एक साधारण बोरी भी कभी बैठने की चटाई बन जाती थी, कभी सामान रखने की जगह और बारिश आ जाए तो वही बोरी खोही के रूप में हमारे सिर का ताज बन जाती थी। हमारे अहीरवाल क्षेत्र में इसे 'खोही' कहा जाता था। अलग-अलग क्षेत्रों में इसके अलग-अलग नाम रहे होंगे। यही तो हमारे देश की खूबसूरती है कि एक ही वस्तु अलग-अलग इलाकों में अलग नाम और अलग स्मृतियों के साथ जीवित रहती है। किसी के लिए यह बोरी होगी, किसी के लिए कट्टा, किसी के लिए कोई और स्थानीय नाम - लेकिन इन्हसे जुड़ी बचपन की भावनाएं शायद लगभग एक जैसी ही होंगी। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि उस दौर में हमारे पास चीजें कम थीं, लेकिन उन्हें आनंद में बदलने की कला खूब थी। एक छोटी-सी चीज में खेल ढूँढ लेना, बारिश में भीगना, मिट्टी में पैर सानना, दोस्तों के साथ हँसना और मामूली-सी चीज को भी खास बना देना, शायद यही बचपन था।

आज का दिन भी मेरे लिए कुछ ऐसा ही रहा। बारिश हो रही थी। छतरी घर में रखी थी और मैं उसे लेकर निकल सकता था, लेकिन मन में कहा कि आज बारिश को महसूस किया जाए। आज सुविधाओं से ज्यादा आनंद चाहिए था। और जब आनंद की बात आती है तो बचपन अपने आप सामने आ जाता है। नजर पड़ी एक चूरी के कट्टे पर। अचानक बचपन की वही 'खोही' याद आ गई। मैंने उसी अंदाज में उसे तैयार किया, जैसे बचपन में खोही सिर पर रखकर बारिश से बचा करते थे। कुछ ही क्षणों में वह कट्टा मेरे सिर पर था और मैं बारिश के बीच चल रहा था। उस पल लगे जैसे अब ने कुछ देर के लिए पीछे लौटने का रास्ता खोल दिया हो। चेहरे पर बारिश की बूंदें थीं, लेकिन मन में बचपन की हंसी थी। आसपास आधुनिक दुनिया थी, लेकिन भीतर वही पुराना स्कूल, वही बोरी, वही अपनी जगह और वही दोस्तों की आवाजें थीं। कभी-कभी जिंदगी में आनंद पाने के लिए बड़ी चीजों की जरूरत नहीं होती।

एक साधारण बोरी भी कभी बैठने की चटाई बन जाती थी, कभी सामान रखने की जगह और बारिश आ जाए तो वही बोरी खोही के रूप में हमारे सिर का ताज बन जाती थी।

महंशे साधन, बड़े पर्यटन स्थल या शानदार व्यवस्थाएं ही खुशी का कारण नहीं हैं। आनंद तो हमारे आसपास बिखरा पड़ा है, बस उसे देखने वाली नजर चाहिए। एक पुरानी बोरी हमें बचपन में पहुंचा सकती है, बारिश की कुछ बूंदें पुरानी गलियों का यद दिला सकती हैं और कोई भूली-बिसरी वस्तु हमें उन लोगों तक ले जा सकती है, जिनके साथ हमने जीवन के सबसे सुंदर दिन बिताए थे। आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में शायद हमें फिर से उसी बच्चे की जरूरत है, जो छोटी-सी चीज में बड़ी खुशी खोज लेता था। इसलिए अपनी पुरानी यादों को केवल याद मत कीजिए, कभी-कभी उन्हें जी भी लीजिए। बारिश हो तो भीगिए, मिट्टी की खुशबू महसूस कीजिए, बचपन की कोई वस्तु हाथ में उठाइए और अपने भीतर छिपे उस बच्चे से मिलिए, जो आज भी कहीं न कहीं आपका इंतजार कर रहा है। आनंद को खोजने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं है। वह हमारे अतीत की किसी 'खोही' में भी छिपा हो सकता है। बस जरूरत है, उसे पहचानने की। आनंद ढूँढते रहिए और आनंदित रहिए।

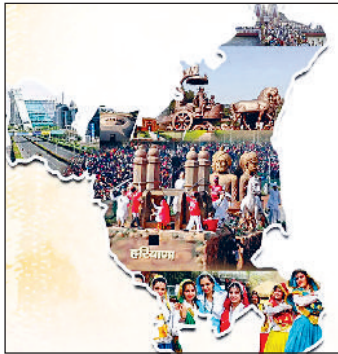
हरियाणवी का संस्कृत और वैदिक साहित्य से गहरा नाता



कलाकार

अंकुर शर्मा

हरियाणा केवल भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास का ही नहीं, बल्कि उसकी प्राचीन भाषिक परंपरा का भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित यह क्षेत्र वैदिक सभ्यता की प्रमुख कर्मभूमि माना जाता है। अनेक विद्वानों का मत है कि ऋग्वेद सहित वैदिक साहित्य के अनेक मंत्रों की रचना इसी सांस्कृतिक परिवेश में हुई। यही कारण है कि हरियाणा की लोकभाषा और उसकी विभिन्न बोलियों में आज भी प्राचीन भारतीय भाषिक परंपरा की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। बांगरू, अहीरवाटी, बागड़ी, कौरवी तथा मेवाती जैसी बोलियाँ केवल ग्रामीण संप्रेषण का माध्यम नहीं हैं, बल्कि भारतीय भाषाओं के विकासक्रम की जीवंत कड़ियाँ भी हैं। भाषावैज्ञानिकों के अनुसार हरियाणवी बोलियाँ मुख्यतः शीरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिंदी समूह की सदस्य हैं। यह वही भाषिक क्षेत्र है जिसने आगे चलकर खड़ी बोली, बज्ज, कन्नौजी तथा हरियाणवी जैसी बोलियों को जन्म दिया। इसलिए हरियाणवी और संस्कृत का संबंध प्रत्यक्ष न होकर एक दीर्घ भाषिक परंपरा के माध्यम से स्थापित होता है। इस दृष्टि से हरियाणवी में संस्कृत की अनेक ध्वनियाँ, शब्द, व्याकरणिक संरचनाएं तथा सांस्कृतिक



अभिव्यक्तियाँ आज भी सुरक्षित दिखाई देती हैं। ध्वन्यात्मक स्तर पर हरियाणवी अनेक प्राचीन विशेषताओं को संरक्षित किए हुए है। उदाहरण के लिए संस्कृत के मूह्र्ध्व 'ण' का प्रयोग हरियाणवी में आज भी व्यापक रूप से मिलता है। जहाँ मानक हिंदी में अनेक स्थानों पर 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग होने लगा है, वहीं हरियाणवी में पाणी, माणस, घणा, बाणी जैसे शब्द सहज रूप से बोले जाते हैं। यह विशेषता प्राचीन संस्कृत तथा शीरसेनी परंपरा की स्मृति को जीवित रखती है। इसी प्रकार कुछ स्थानों पर संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण और ध्वनि-संरचना में भी प्राचीन भाषिक प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखाई देता है। शब्द-संपदा की दृष्टि से भी हरियाणवी अत्यंत समृद्ध है। ग्रामीण जीवन में आज भी अनेक ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनकी जड़ें संस्कृत में मिलती हैं। उदाहरणस्वरूप 'गोधूम' से 'गेहूँ', 'क्षेत्र' से 'खेत', 'दुग्ध' से 'दूध', 'धुत' से 'घी',

'क्ष्मा' से 'भाई', 'पितृ' से 'पितर' तथा 'मातृ' से 'माता' जैसे शब्द भाषिक निरंतरता के सशक्त उदाहरण हैं। इन शब्दों का उच्चारण समय के साथ सरल अवश्य हुआ है, किंतु उनका मूल संस्कृत से जुड़ा हुआ है। यह परिवर्तन भाषा की स्वाभाविक विकास प्रक्रिया का परिणाम है, न कि उसके मूल स्वरूप के लोप का। व्याकरणिक स्तर पर भी हरियाणवी में अनेक ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं जो उसे प्राचीन भारतीय भाषिक परंपरा से जोड़ती हैं। अनेक क्रियाएँ और धातु-आधारित शब्द संस्कृत से विकसित रूपों में आज भी प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए 'करना' का संबंध संस्कृत की 'कृ' धातु तथा 'जाना' का संबंध 'गम्' धातु से माना जाता है। यद्यपि इनका वर्तमान रूप प्राकृत और अपभ्रंश के विभिन्न चरणों से होकर विकसित हुआ है, फिर भी इनके मूल स्रोत संस्कृत में निहित हैं। यही भाषिक निरंतरता हरियाणवी की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित करती है। हरियाणा की विभिन्न बोलियों में संस्कृत के प्रभाव का स्वरूप भी अलग-अलग दिखाई देता है। मध्य हरियाणा की बांगरू बोली अपेक्षाकृत संतुलित और व्यापक रूप से प्रचलित है। दक्षिण हरियाणा की अहीरवाटी में राजस्थानी प्रभाव के साथ संस्कृत मूल के अनेक शब्द सुरक्षित हैं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की कौरवी बोली में संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण तथा ध्वनि-बल की विशेष प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार पश्चिमी हरियाणा की बागड़ी और दक्षिणी क्षेत्र की मेवाती में भी स्थानीय प्रभावों के साथ संस्कृत-प्राकृत परंपरा की अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं।

कभी सरस्वती के तट पर गूंजने वाली वैदिक वाणी की प्रतिध्वनि आज भी हरियाणा के खेतों, चौपालों, लोकगीतों और रागनियों में अनुभव की जा सकती है।

इससे स्पष्ट होता है कि हरियाणा की प्रत्येक बोली भारतीय आर्य भाषाओं के विकासक्रम का अपना विशिष्ट स्वरूप प्रस्तुत करती है। हरियाणवी का संस्कृत से संबंध केवल भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक स्तर पर भी अत्यंत गहरा है। वेदों और उपनिषदों में वर्णित प्रकृति के प्रति सम्मान, श्रम की महिमा, सत्य, कर्तव्य, पारिवारिक मर्यादा तथा लोककल्याण की भावना हरियाणा के लोकजीवन में आज भी स्पष्ट दिखाई देती है। लोकगीतों, रागनियों, सांग साहित्य, कहावतों और मुहावरों में इन जीवन मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। अनेक लोककथाएँ और लोकविश्वास भारतीय दार्शनिक परंपरा की स्मृतियों को सरल लोकभाषा में संजोए हुए हैं। हरियाणा के सांग साहित्य और लोककवियों की रचनाओं में कर्म, धर्म, लोकमंत्र और ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण जैने भाव-बार-बार व्यक्त होते हैं। ये वही मूल्य हैं जिनका उल्लेख वैदिक तथा उत्तरवैदिक साहित्य में मिलता है। ग्रामीण समाज में प्रचलित अनेक लोकोक्तियाँ अनुभवजन्य ज्ञान का

ऐसा रूप प्रस्तुत करती हैं, जिनमें भारतीय दार्शनिक चिंतन की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। इस प्रकार हरियाणवी लोकसंस्कृति प्राचीन भारतीय ज्ञानपरंपरा की सशक्त वाहक सिद्ध होती है। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि भाषाओं का विकास निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया है। इसलिए हरियाणवी को संस्कृत की प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी कहना भाषावैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः उचित नहीं होगा। अधिक सटीक यह कहना होगा कि हरियाणवी भारतीय आर्य भाषाओं की उस दीर्घ विकास-शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसकी प्रारंभिक आधारभूमि वैदिक संस्कृत रही है। इसीलिए हरियाणवी में संस्कृत के अनेक ध्वन्यात्मक, शब्दगत, व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक तत्त्व आज भी सुरक्षित दिखाई देते हैं। निरसंदेह हरियाणा की क्षेत्रीय बोलियां अपने भीतर एक गौरवशाली भाषिक और सांस्कृतिक इतिहास समेटे हुए हैं। उनका शब्द-भंडार, उच्चारण, व्याकरण तथा लोकसाहित्य भारतीय भाषाओं की प्राचीन परंपरा से उनके गहरे संबंध का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। कभी सरस्वती के तट पर गूंजने वाली वैदिक वाणी की प्रतिध्वनि आज भी हरियाणा के खेतों, चौपालों, लोकगीतों और रागनियों में अनुभव की जा सकती है। यही कारण है कि हरियाणवी बोलियों को केवल क्षेत्रीय बोली मानकर सीमित कर देना उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व का उचित मूल्यांकन नहीं होगा। वे भारतीय भाषिक विरासत की अमूल्य धरोहर हैं और हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की सशक्त संरक्षक भी।

प्रतियोगिताएं छात्रों को संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम और आदर की प्रेरणा देती संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता में रेजांगला व करियप्पा सदन विजेता

अंतरसदनीय संस्कृत
श्लोक पाठ वाचन
प्रतियोगिता का
आयोजन किया

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

श्लोक पाठ के लिए अलग-अलग विषय रखे गए

गांव गोठड़ा स्थित अहीर सैनिक स्कूल में कनिष्ठ समूह व कनिष्ठतम समूह की अंतरसदनीय संस्कृत श्लोक पाठ वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में श्लोकों के उच्चारण, प्रस्तुति और भाव को महत्व दिया गया। सभी वरिष्ठ सदनों के विभाजन अनुरूप श्लोक पाठ के लिए अलग-अलग विषय रखे गए, जिसके लिए विद्या, आत्मज्ञान, मित्रता, विवेक, ज्ञान, धार्मिकजीवन, ब्रह्मज्ञान, संग, निष्काम कर्म, दान, काल, स्वधर्म, कठिन सत्य आधारित विषयों का चयन किया गया। प्रतियोगिता में कक्षा 6, 7 व 8 के अठारह कैटेडरस ने अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में विद्यालय प्राचार्य



रेवाड़ी। कार्यक्रम में विजेताओं को पुरस्कृत करते प्राचार्य।

फोटो : हरिभूमि

स्पर्धा का उद्देश्य प्राचीन ज्ञान की गहन समझ का उत्थान करना

प्राचार्य कैप्टन बिज किशोर ने कहा कि यह प्रतियोगिता न केवल छात्रों को संस्कृत भाषा के प्रति प्रेम और आदर सिखाती, बल्कि उन्हें अपनी संस्कृति के प्रति गर्व की भावना से भी भरती है। प्रतियोगिता का उद्देश्य प्रतिभागियों और व्यापक समुदाय के बीच संस्कृत भाषा में उपलब्ध शिक्षाओं और महत्व को बढ़ावा देना एवं प्राचीन ज्ञान की गहन समझ का उत्थान करना और दैनिक जीवन में इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता ने कैटेडरस के लिए प्राचीन ज्ञान के साथ अपने जुड़ाव को गहरा करने और ज्ञान व व्यवहार की शाश्वत शिक्षाओं को बेहतर ढंग से समझने का एक मंच प्रदान किया। प्राचार्य ने प्रमारी अष्ट्यापकों, सदनाध्यक्षों, कर्मचारियों तथा सभी अकादमिक-प्रशासनिक कर्मियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम छात्र प्रमारी कैटेडर आयुष्य सैनी रहे। वहीं मंच संचालन कैटेडर आलोक कश्यप व कैटेडर सिसल वैष्णवी ने किया। प्रतियोगिता समग्र प्रमारी विजयेंद्र सोलंकी टीजीटी संस्कृत थे।

कक्षा 6 के कनिष्ठतम सदन के प्रतिभागियों में कैटेडर ओमांश रेजांगला सदन ने प्रथम, कैटेडर दीया रेजांगला सदन ने द्वितीय व कैटेडर केशव कारगिल सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समग्र परिणाम

के आधार पर रेजांगला सदन ने प्रथम व कारगिल सदन द्वितीय स्थान पर रहा। वहीं प्रतियोगिता में कक्षा 7-8 कनिष्ठ सदनों से सुब्रतो सदन के कैटेडर नैतिक ने प्रथम, करियप्पा सदन के कैटेडर शौर्य ने

द्वितीय व अर्जन सदन के कैटेडर सार्थक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समग्र परिणाम के आधार पर करियप्पा सदन ने प्रथम, सुब्रतो सदन ने द्वितीय व कटारी सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

बोलेरो की टक्कर से विक्की सवार की मौत

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ मंडी अटेली

खंड सिहमा में रविवार सायं करीब साढ़े चार बजे दर्दनाक सड़क हादसे में खासपुर निवासी करीब 40 वर्षीय संदीप पुत्र सुभाष की मौत हो गई। जबकि एक अन्य युवक मदनलाल घायल हो गया। यह हादसा सिहमा स्थित शराब के ठेके के सामने हुआ। मौके पर मौजूद ग्रामीणों के अनुसार नारनौल की ओर से आ रही बोलेरो ने अनियंत्रित होकर पहले सड़क किनारे पेड़ से टकराई और इसके बाद सिहमा बस स्टैंड की ओर से आ रही विक्की को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी धीषण थी कि विक्की सवार



मंडी अटेली। बोलेरो को ट्रेन की सहायता से ले जाते हुए।

फोटो : हरिभूमि

दोनों युवक सड़क पर जा गिरे। बताया जा रहा है कि बोलेरो में तीन युवक सवार थे। हादसे में बोलेरो सवार एक युवक भी घायल हो गया, जबकि दो अन्य युवक मौके से चले गए। वाहन की चालक सीट खून से सनी हुई है, वहीं पीछे वाली सीट पर बीयर के केन भी पड़े मिले हैं। मौके पर ग्रामीणों ने

एंबुलेंस की सहायता से घायलों को नारनौल नागरिक अस्पताल भिजवाया, लेकिन रास्ते में ही संदीप ने दम तोड़ दिया। हादसे के बाद खासपुर गांव में एकबार फिर मातम छा गया। इसी माह छह अगस्त को खासपुर में जवाहरलाल कैनाल नहर में डूबने से दो बच्चों की मौत हुई थी।

महंगाई और जनसमस्याओं के खिलाफ किसान-मजदूर संगठन करेंगे प्रदर्शन

नारनौल। महंगाई समेत आमजन से जुड़े विभिन्न मुद्दों को लेकर ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन और भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन की ओर से संयुक्त रूप से विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। संगठन के कार्यकर्ता 31 अगस्त को सोमवार सुबह 11 बजे पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह के सामने एकत्रित होकर प्रदर्शन करेंगे और सरकार के खिलाफ रोष जताते हुए पुतला जलाएंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन प्रेषित

■ पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह के सामने जुटें कार्यकर्ता, प्रधानमंत्री के नाम सौंपेंगे ज्ञापन

किया जाएगा।

किसान नेता एवं ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के जिला प्रधान बलबीर सिंह ने बताया कि आम आदमी की ज़िंदगी लगातार मुश्किल होती जा रही है।

रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं के दाम बढ़ने से आम परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों में चीनी के दाम लगभग दोगुने हो गए हैं, जिससे आम उपभोक्ता बुरी तरह प्रभावित है।

आईजीयू में खेल परिषद की बैठक में हुआ मंथन

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में खेल परिषद की 10वीं महत्वपूर्ण बैठक विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य संरक्षक प्रोफेसर असोम मिगलानी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से विश्वविद्यालय का आगामी खेल बजट पारित किया गया, साथ ही खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास, प्रोत्साहन और खेल सुविधाओं के विस्तार को लेकर कई ऐतिहासिक एवं दूरगामी निर्णय लिए गए। बैठक में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रोफेसर करण सिंह, कुलसचिव प्रोफेसर दिलबाग सिंह,



रेवाड़ी। आईजीयू में खेल बजट की बैठक लेते हुए कुलपति।

फोटो : हरिभूमि

खेल परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रोफेसर विकास बत्रा तथा सचिव सह खेल निदेशक डा. अशोक यादव सदस्य के रूप में उपस्थित थे। इनके अलावा चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय सिरसा से प्रोफेसर अशोक शर्मा और दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रोफेसर जेपी शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। बैठक में

विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं शारीरिक शिक्षा शिक्षक भी मौजूद थे। इस मौके पर खिलाड़ियों के आवागमन को सुलभ और आरामदायक बनाने के लिए एक 10-15 सीटर नई एसयूवी गाड़ी खरीदने की मंजूरी दी गई, ताकि प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को यात्रा के दौरान कोई

रिपोर्ट के बारे में अवगत कराया। मीटिंग में विचार विमर्श के बाद कई प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए, जिसमें पांच सदस्यीय समिति का गठन किया गया, जो श्रीकृष्ण भवन के भूतल को किराए पर देने संबंधी जरूरी औपचारिकताएं पूरी करेंगी तथा सभा के कार्य

की देखरेख के लिए सुपरवाइजर के चयन संबंधी कार्य को देखेंगी। सभा की तरफ से अन्य पिछड़ा वर्ग की क्रीमीलेयर की आय-सीमा बढ़ाने संबंधित ज्ञापन केंद्र सरकार को व अन्य पिछड़ा वर्ग के सभी एमपी को भेजे जा चुके हैं, उनकी हार्ड कॉपी केंद्रीय राज्य मंत्री



रेवाड़ी। बैठक में सभा के सदस्यों को संबोधित करते प्रधान।

फोटो : हरिभूमि

हुआ मंथन

परेशानी न हो। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय का मान बढ़ाने वाले खिलाड़ियों की नकद प्रोत्साहन राशि में बढ़ोतरी करने का भी फैसला लिया गया। नए स्वीकृत नियमों के अनुसार, अब प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 51000 (पहले 21000), द्वितीय स्थान पर 31000 (पहले 18000) और तृतीय स्थान पर 21000 (पहले 15000) की नकद राशि दी जाएगी। इसके साथ ही, पहली बार राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर केवल भाग लेने वाले खिलाड़ियों के लिए भी 11000 की प्रोत्साहन राशि स्वीकृत की गई।

11 किसानों के ट्यूबवेलों से बिजली केबल चोरी, केस

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ नारनौल

निजामपुर थाना के गांव में चोरों ने एक ही रात में 11 किसानों के ट्यूबवेलों को निशाना बनाते हुए बिजली की केबल चोरी कर ली। घटना के बाद किसानों में रोष है। पीडित किसान की शिकायत पर निजामपुर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में ताजीपुर निवासी राजेश ने बताया कि 27 व 28 अगस्त की रात उसके

ट्यूबवेल से बिजली की केबल चोरी हो गई। बाद में जानकारी मिली कि आसपास के कई अन्य किसानों के ट्यूबवेलों से भी अज्ञात चोर बिजली की केबल उखाड़कर ले गए हैं। शिकायत के अनुसार चोरों ने ओमप्रकाश, गुलजारी सरपंच, इंद्राज नंबरदार, प्रेम सिंह, विक्रम, चेताराम, ओमपाल, सुखराम, हंसराज, कैलाश तथा शिकायतकर्ता राजेश के ट्यूबवेलों से बिजली की केबल चोरी कर ली।

■ निजामपुर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की

पुरस्कार सांस्कृतिक अहीरवाल ट्रस्ट की ओर से कोसली में किया गया कार्यक्रम

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सांस्कृतिक अहीरवाल के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री ने शिरकत की

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ कोसली

सांस्कृतिक अहीरवाल ट्रस्ट की ओर से नाहड़ खंड का पर्यावरण प्रहरी सम्मान समारोह कोसली में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कैप्टन धर्मवीर सिंह यादव झाड़ावा ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सांस्कृतिक अहीरवाल के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री ने शिरकत की, जबकि विशिष्ट अतिथि सुबेदार मेजर अमर सिंह थे। खंड संयोजक वेदप्रकाश आर्य ने अतिथिों का स्वागत किया। सम्मान समारोह में खंड के सभी 45 गांवों में से 38 गांवों के 156 प्रतिनिधि उपस्थिति थे, जिन्हें पर्यावरण प्रहरी के रूप में सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम में 2 महिलाओं को भी अपने गांव में पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे



रेवाड़ी। कार्यक्रम में ग्रामीणों को सम्मानित करते आयोजक।

फोटो : हरिभूमि

लगाने के लिए सम्मानित किया गया। इस मौके पर सांस्कृतिक अहीरवाल के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री ने कहा पर्यावरण संरक्षण आज की आवश्यकता है। जो प्रकृति की अनुपम भेंट है। प्रकृति प्रदत्त यह भेंट आज संकट में है, इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए समाज को आगे आना होगा। उन्होंने कहा

कि अहीरवाल की परिकल्पना जाति आधार पर नहीं है, यह वह सांस्कृतिक धरोहर है, जिसका संरक्षण, संवर्धन हमारे पूर्वजों ने हजारों सालों से किया है। शास्त्री ने कहा कि हम अभी तक अति प्रकृतिकता को भाव प्रकट करते हुए उनके द्वारा किए गए कार्य को स्मरण कर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट कर रहे हैं। हमें अपने सांस्कृतिक मान बिंदुओं का गौरवपूर्ण ढंग से पालन करना

गए ऐतिहासिक सामाजिक धार्मिक कार्यों को याद नहीं रख पाए, परंतु अब सभी लोगों ने मिलकर अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हुए उनके द्वारा किए गए कार्य को स्मरण कर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट कर रहे हैं। हमें अपने सांस्कृतिक मान बिंदुओं का गौरवपूर्ण ढंग से पालन करना

ये रहे मौजूद

सतीश खेड़ा, यशपाल सरपंच, कैप्टन रामफल यादव, रंजन यादव, प्रेमप्रकाश यादव, बल्लभप्रकाश, अजय लूखी, कर्णसिंह, मास्टर सुरेश, धर्मवीर शर्मा, राजपाल यादव, सतीश स्वामी, रवि यादव, फूलकुमार, रघुवीर बाबू, रणवीर सरपंच कुहारड़, सतीश जिला संयोजक सरपंच व हंसराज पीटीआई उपस्थित थे। चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों में इस संस्कृति के प्रति आदर भाव सम्मान कायम रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कैप्टन धर्मवीर यादव ने कहा पर्यावरण प्रति जागरूकता की आवश्यकता है। जिला संयोजक सुरेंद्र मांडिया ने सभी का आभार जताया। मंच संचालन जिला प्रभारी यशपाल आर्य ने किया।

आवारा पशुओं से दुर्घटना पर दयालु-2 योजना के तहत दी जा रही आर्थिक सहायता

■ योजना का लाभ लेने के लिए घटना के 90 दिनों के भीतर करना होगा ऑनलाइन आवेदन
हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

हरियाणा सरकार की ओर से आवारा पशुओं से हुई दुर्घटना के पीड़ित लोगों को दयालु-2 योजना के तहत आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। सदकों पर घूम रहे पशुओं से होने वाली दुर्घटना में किसी भी नागरिक की मृत्यु या दिव्यांगता होने की स्थिति में दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय परिवार सुरक्षा योजना (दयालु-2) के तहत एक लाख से पांच लाख रूपए तक आर्थिक सहायता प्रदान करने का प्रावधान है। इसी अभिषेक मौपान ने बताया कि दयालु योजना के अंतर्गत दुर्घटना में मृत्यु या दिव्यांगता होने पर संबंधित परिवार को एक लाख रुपये से पांच लाख रुपये तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त, चोट लगने की स्थिति में न्यूनतम 10 हजार रुपये की सहायता

आर्थिक सहायता का प्रावधान

डीसी ने बताया कि मृत्यु-दिव्यांगता (70 प्रतिशत या अधिक) की स्थिति में आयु 0-12 वर्ष तक 1 लाख रुपये, आयु 12 से 18 तक 2 लाख रुपये, आयु 18 से 25 तक 3 लाख रुपये, आयु 25 से 45 तक 5 लाख रुपये तथा आयु 45 से अधिक 3 लाख रुपये की आर्थिक सहायता का प्रावधान है। दयालु-2 योजना के तहत मामूली चोट की स्थिति में 10 हजार रुपये, कुत्ते के प्रत्येक दांत के निशान पर 10 हजार रुपये तथा घाव के प्रत्येक 0.2 सेमी. पर न्यूनतम 20 हजार रुपये का प्रावधान किया गया है।

राशि प्रदान की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए परिवार का परिवार पहचान पत्र के तहत पंजीकृत होना अनिवार्य है।

डीसी ने बताया कि मृत्यु, चोट अथवा दिव्यांगता की स्थिति में योजना का लाभ लेने के लिए घटना के दिन से लेकर 90 दिन के भीतर आवेदन करना होगा। परिवार पहचान पत्र धारक हरियाणा के निवासी को योजना का लाभ मिलेगा। योजना का लाभ कुत्ता के काटने अथवा आवारा पशुओं जैसे



गाय, बैल, सांड, गधा, कुत्ता, नीलगाय, भैंस आदि के कारण हुई दुर्घटना में मृत्यु चोट व दिव्यांगता की स्थिति में ही मिलेगा। डीसी ने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए निर्धारित आवश्यक दस्तावेजों में मृत्यु के मामले में मृत्यु प्रमाण पत्र, एफआईआर-डीडीआर की प्रति, जिसमें दर्शाया हो कि दुर्घटना आवारा पशु, जानवर व कुत्ते के काटने के कारण हुई है। दिव्यांगता की स्थिति में संबंधित जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी-चिकित्सा बोर्ड द्वारा विधिवत जारी किया।

धारूहेड़ा में पर्यटन निगम के पूर्व चेयरमैन राव इंद्रपाल के पोते अमन राव का पलड़ा भारी तीन माह बाद भी नप को नहीं मिला वीसी धारूहेड़ा में वाइस चेयरमैन का चुनाव आज

शहर में केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत समर्थक के चांस ज्यादा

■ अमन राव के पास नगर पालिका के पार्षदों का बहुमत

नरेन्द्र वर्मा ▶▶ रेवाड़ी

शहर की सरकार का कार्यकाल लगभग तीन माह पहले शपथ ग्रहण के साथ शुरू हो गया था, लेकिन अभी तक वाइस चेयरमैन का चुनाव नहीं हुआ है। धारूहेड़ा में इसके बाद शपथ ग्रहण हुआ था। वहां 31 अगस्त को वाइस चेयरमैन के चुनाव घोषित कर दिए गए हैं। धारूहेड़ा में पर्यटन निगम के पूर्व चेयरमैन राव इंद्रपाल के पोते अमन राव का पलड़ा भारी माना जा रहा है। वाइस चेयरमैन बनने के लिए 18 में से 10 पार्षदों का साथ मिलना जरूरी है। निकाय चुनावों के दौरान शहर और धारूहेड़ा



रेवाड़ी। धारूहेड़ा नगरपालिका कार्यालय।

फोटो : हरिभूमि

नगर पालिका में चेयरमैन की टिकट को लेकर भाजपा में जमकर घमासान हुआ था। आखिरकार दोनों निकाय में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह समर्थकों को टिकट थमाई गई थी। कई पुराने भाजपा नेताओं के अंदर खाने विरोध के बावजूद राव इंद्रजीत सिंह शहर में विनीता पीपल और धारूहेड़ा में अजय जांगड़ा को चेयरमैन पद पर जीत दिलवाने में कामयाब रहे थे। शहर में इलेक्शन मैनेजमेंट का जिम्मा राव ने सुनील मुसेपुर, विधायक डा. कुमार और

भाजपा जिलाध्यक्ष डा. वंदना पोपली को सौंपा हुआ था, तो धारूहेड़ा में कोसली के विधायक अनिल यादव व अनिल रायपुर को चुनाव प्रबंधन की कमान सौंपी हुई थी। सटीक रणनीति के चलते राव अपने विरोधियों को मात देने में कामयाब रहे थे। अब दोनों निकाय में वाइस चेयरमैन के चुनाव को लेकर निगाहें टिकी हुई हैं। शहर में राव समर्थक पार्षदों का बहुमत होने के कारण उनके आशीर्वाद वाले पार्षद को ही वाइस चेयरमैन बनाने के चांस ज्यादा हैं।

अभिभावक और शिक्षक विद्यार्थियों के विकास के दो मुख्य आधार: प्रधानाचार्य

■ डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में अभिभावक-शिक्षक सभा का हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में अभिभावक-शिक्षक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अभिभावकों ने अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति, व्यवहार, अनुशासन एवं सर्वांगीण विकास के संबंध में शिक्षकों से संवाद किया। सभा का मुख्य उद्देश्य विद्यालय और अभिभावकों के बीच प्रभावी संवाद स्थापित करना तथा विद्यार्थियों की प्रगति को बेहतर दिशा प्रदान करना रहा। शिक्षकों ने अभिभावकों के साथ विद्यार्थियों की उपलब्धियों एवं सुधार के क्षेत्रों पर चर्चा करते हुए



रेवाड़ी। प्रदर्शनी में बच्चों के कार्य का अवलोकन करते अभिभावक। फोटो: हरिभूमि

उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक सुझाव साझा किए। विद्यालय प्रधानाचार्य ने कहा कि अभिभावक और शिक्षक विद्यार्थियों के विकास के दो महत्वपूर्ण आधार हैं। दोनों के बीच निरंतर एवं सकारात्मक संवाद से विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचानने और उन्हें सही दिशा देने में सहायता मिलती है। उन्होंने अभिभावकों की सक्रिय

सहभागिता की सराहना करते हुए कहा कि विद्यालय और अभिभावकों का सहयोग विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभिभावकों ने विद्यालय की ओर से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

पुलिस और युवाओं में मैत्रीपूर्ण वालीबॉल मैच, नशे से दूर रहने के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

सामाजिक एकता एवं खेल भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिला पुलिस की ओर से चलाए जा रहे खेलोगा भारत, जीतेगा भारत अभियान के तहत खेल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जादूमाना थाना प्रबंधक ईश्वरचंद विद्यासागर की देखरेख में गांव

परखोतमपुर में पुलिस कर्मचारियों तथा युवाओं के बीच मैत्रीपूर्ण वालीबॉल प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में गांव व आसपास के क्षेत्र के युवाओं ने अनुशासित भावना और उत्साह के साथ भाग लिया। मैच के दौरान पुलिसकर्मियों और



युवाओं के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली। ग्रामीणों ने खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। ईश्वरचंद ने युवाओं व ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि ये शारीरिक व मानसिक विकास के साथ-साथ जीवन में अनुशासन भी सिखाते हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान करते हुए नशा छोड़ो, खेलों से नाता जोड़ो का संदेश दिया और उन्हें नशे जैसी सामाजिक बुराईयों से दूर रहकर एक स्वस्थ व अनुशासित जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।

नशे के खिलाफ हॉफ मैराथन के लिए युवाओं में उत्साह, 60 हजार लोगों ने कराया पंजीकरण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

जिले में 6 सितंबर को आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय हॉफ मैराथन में युवा एकजुटता से दौड़ेंगे और नशे को हारने का संकल्प लेंगे। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मैराथन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। यह मैराथन युवाओं को नशे से दूर रहने के साथ ही स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगी। डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि मैराथन से संबंधित तमाम तैयारियां एवं व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 60 हजार के करीब प्रतिभागी मैराथन के लिए अपना पंजीकरण

प्रतिभागियों को दिए जाएंगे ई-सर्टिफिकेट डीसी मीणा ने बताया कि मैराथन में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट जारी किए जाएंगे। इसके अलावा 10 किलोमीटर लंबे के महिला एवं पुरुष वर्ग के विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। दोनों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विजेता को 1 लाख रुपये, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को 50 हजार रुपये तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को 21 हजार रुपये की पुरस्कार राशि दी जाएगी। डीसी ने बताया कि राज्य स्तरीय हाफ मैराथन में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सुविधा एवं सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाएगा। प्रतिभागियों के लिए फर्स्ट एड, पेयजल, मेडिकल सुविधा और रिफ्रेशमेंट सहित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएगी।

करा चुके हैं। उन्होंने जिलावासियों, विशेषकर युवाओं से अधिक से अधिक संख्या में पंजीकरण करवाकर मैराथन में भाग लेने का आह्वान किया। डीसी ने कहा कि मैराथन को जन-आंदोलन का रूप देते हुए

अधिक से अधिक लोगों को इससे जोड़ा जा रहा है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे स्वयं मैराथन में भाग लेने के साथ-साथ अपने परिवार और मित्रों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

संगठन की मजबूती कार्यकर्ताओं की सक्रियता समर्पण व आपसी समन्वय पर निर्भर: जरावता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शनिवार को भाजपा के प्रदेश महामंत्री सत्यप्रकाश जरावता के भाजपा नेता अजय कांटीवाल के कार्यालय पहुंचने पर कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। प्रदेश महामंत्री ने कार्यकर्ताओं से संगठनात्मक विषयों तथा पार्टी की आगामी गतिविधियों को लेकर संवाद किया। सत्यप्रकाश जरावता ने कहा कि संगठन की मजबूती कार्यकर्ताओं की सक्रियता, समर्पण और आपसी समन्वय पर निर्भर करती है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कैद एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने तथा संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत बनाने का आह्वान किया। भाजपा नेता अजय कांटीवाल ने कहा कि वरिष्ठ और मित्रों को भी इसके लिए प्रेरित करें।



■ ये रहे मौजूद

इस अवसर पर प्रीतम सिंह चौहान, सुनील चौधर, सत्यदेव यादव, ईश्वर चव्हाण, राखवंत भारद्वाज, दीपक मंगला, नितेश अखावाल, जयवीर योगी, मन्वीर लाम्बा, कविता गुप्ता, नवीन रोहिताला, दीपा भारद्वाज, सौरभ भारद्वाज, कृपा जेमिनी, ममता सैनी, संजय चौहान, नितिन गुप्ता, मनोज एवं वक्की सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता संगठन को मजबूत करने और समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।



रेवाड़ी। चेयरमैन रामकिशन शर्मा का स्वागत करते गणमान्य नागरिक।

जिम्मेदारी का निष्ठा से निर्वहन करना ही प्राथमिकता: रामकिशन

■ रामकिशन को वेयरहाउसिंग कापोरेशन का दायित्व मिलना गौरव की बात : वीरकुमार हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

■ ये रहे मौजूद

इस अवसर पर पंचायती प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक मा. हुकुम चंद यादव, नठेड़ा के सरपंच मनोज कुमार, पूर्व सरपंच कर्ण सिंह एडवोकेट, पूर्व सरपंच हेमंत कुमार, अधिवक्ता परिषद की प्रदेश संयोजक ममता यादव, भाजपा नेता सुरेंद्र सरपंच, विनोद कुमार चेयरमैन, गुरुदयाल एडवोकेट, एडवोकेट रमेश शर्मा, राष्ट्रीय शिक्षक अकादमी मा. जयमगवान सहित बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

निष्ठा से निर्वहन करते हुए किसानों, ग्रामीणों एवं आमजन के हितों के लिए प्रभावी ढंग से कार्य करेंगे। चेयरमैन रामकिशन शर्मा ने कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है, उसका पूरी निष्ठा, ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ निर्वहन करना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के विकास, किसानों के हितों तथा आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए वे सदैव तत्पर रहेंगे। उन्होंने ग्रामीणों एवं अधिवक्ताओं को आश्वासन दिया कि जनहित से जुड़े विषयों को उचित मंच पर मजबूती से उठाया जाएगा।

वाइस चेयरमैन बनने के लिए 18 में से 10 पार्षदों का साथ जरूरी, भाजपा में टिकट के लिए घमासान

शहर में कई पार्षदों की दावेदारी

शहर में वाइस चेयरमैन पद को लेकर कई दावेदार राव दरबार में हाजिरी लगाकर अपना दावा मजबूत करने में लगे हुए हैं। नप के पिछले कार्यकाल में अहीर चेयरमैन होने के कारण राव ने पंजाबी समाज से श्यामलाल चुध को सर्वसम्मति से वाइस चेयरमैन बनवा दिया था। इस बार चेयरमैन अनुसूचित जाति से होने के कारण वाइस चेयरमैन का पद किसी यादव पार्षद को मिल सकता है। निहाल सिंह, इतू व सत्यनारायण लाइन सहित कई पार्षद लाइन में हैं, तो गैर अहीर प्रदीप भागवत भी राव की कृपा के पात्र बन सकते हैं।



अजय भी राव चहेते के पक्ष में

ऐसा माना जा रहा है कि धारूहेड़ा नगर पालिका चेयरमैन अजय जांगड़ा भी केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के ही किसी खास समर्थक को वाइस चेयरमैन का पद दिलाने का प्रयास कर सकते हैं। अमन की ओर से पार्षदों के बहुमत का दावा तो किया जा रहा है, परंतु ऐन वक्त पर पासा पलट भी सकता है। अगर जोड़-तोड़ की राजनीति अपना काम करती है, तो बाजी किसी भी समय पलट सकती है। ऐसे में इस चुनाव को काफी दिलचस्प माना जा रहा है।



सुंदरकांड पाठ के दौरान मनमोहक मंजनों ने भक्तों को किया मंत्रमुग्ध

रेवाड़ी। सेक्टर-1 सोलहराही स्थित प्राचीन इच्छा पूर्ण चोले वाले हनुमान मंदिर में शनिवार राति उर्वे सुंदरकांड पाठ, भंडारे व भजन संस्था का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य यजमान दिनेश गोयल थे। मंदिर पुजारी के पंडित बिजेन्द्र भारद्वाज महर्षिद्वारा बालाजी धाम ने पूजा कराकर कार्यक्रम का शुभारंभ कराया। मंदिर संस्थापक व राष्ट्रीय व्यापार सेवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट भूपेन्द्र सिंह गुप्ता के बताया कि सुंदरकाण्ड पाठ व भंडारा भक्तों की ओर से किसी भी सुखों के अवसर पर कराया जाता है। इस मौके पर गायक गोपाल वर्मा ने अपने मनमोहक मंजनों से सभी भक्तों को मंत्रमुग्ध किया। इस मौके नगर परिषद चेयरमैन विनीता पीपल, एडवोकेट नरेंद्र पीपल, भाजपा नेता दीपक मंगला, राष्ट्रीय व्यापार सेवा संघ के प्रदेश महासचिव सुरेंद्र वशिष्ठ, उपाध्यक्ष अर्जुन लोहिया, प्रधान बिल्डर पीसवाल, उपप्रधान चरण सिंह, भगत सिंह युवा दल के अध्यक्ष दिनेश कपूर, नगर पार्षद वंदना एडवोकेट, पार्षद नीरज, पार्षद सचिन, पार्षद पूनम, पार्षद सुकेश सोनी, पार्षद मंगलम, पार्षद मनीष टिकानिया, पार्षद प्रतिनिधि कमल शर्मा, दीपक जांगड़ा व रिशु यादव सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद थे।



रेवाड़ी। कार्यक्रम में मौजूद नप चेयरमैन व अन्य गणमान्य लोग।

इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमर चौटाला एक को रेवाड़ी में, कार्यकर्ताओं से होंगे रुबरु

रेवाड़ी। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. अमर चौटाला 1 सितंबर को जिले के तीनों हलकों का दौरा कर कार्यकर्ताओं से रुबरु होंगे। इनेलो प्रदेश प्रवक्ता एडवोकेट रजवंत डहिनवाल ने बताया कि 27 सितंबर को गुरु में होने वाले पूर्व उपप्रधानमंत्री चौ. देवीलाल की जयंती समारोह के उपलक्ष्य में इनेलो राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदेश के हर हलके का दौरा कर लोगों को निर्माण दे रहे हैं। एडवोकेट डहिनवाल ने बताया कि अमर चौटाला 1 सितंबर को प्रातः 10 बजे बावल हलके के गांव बनीपुर, दोपहर 1 बजे रेवाड़ी रामगढ़ रोड स्थित शिवम होटल व दोपहर 3 बजे गांव डहनीना में कार्यकर्ताओं से रुबरु होंगे। रविवार को आयोजित बैठक में इनेलो जिला प्रधान डा. राजपाल यादव ने कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता संपत राम दहनवाल, रेवाड़ी हलका प्रधान वरुण गांधी, बावल हलका प्रधान सुमेर सिंह बनीपुर, कोसली हलका प्रधान कुलदीप यादव, जिला प्रधान महासचिव नरेश यादव, लीगल सेल संयोजक एडवोकेट सतीश यादव, सचिव झारुआ, जयवंत शाहपुर, सुरेंद्र डूडी व कैप्टन रतन सिंह सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

रेवाड़ी कार्यालय : द्वापर नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नरेंद्र नगर महराणा

प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

संवाद एसआई विक्रम ने कंवली का दौरा कर किया ग्रामीणों से संवाद

नशे के दुष्प्रभावों बारे बताया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ डहनीना

आमजन की सुरक्षा व कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की दिशा में डहनीना चौकी ईंचार्ज एसआई विक्रम सिंह ने रविवार को क्षेत्र के गांव कंवली का दौरा किया। उन्होंने ग्रामीणों के साथ संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं और सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूक किया। एसआई विक्रम सिंह ने ग्रामीणों, विशेषकर युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति सचेत किया। उन्होंने कहा कि समाज से नशे की बुराई को मिटाने के लिए पुलिस का सहयोग करें। यदि क्षेत्र में कोई व्यक्ति नशा बेचता या तस्करी करता पाया जाता है, तो इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें।

गांवों में अपराधों पर अंकुश के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाने की अपील



रेवाड़ी। ग्रामीणों को संबोधित करते एसआई विक्रम सिंह।

साइबर अपराधों से बचाव के लिए मंत्र

चौकी इंजार्ज ने वर्तमान में बढ़ते डिजिटल अपराधों पर चर्चा करते हुए बताया कि किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ अजाना बैंक ओटीपी, पासवर्ड, पिन या कोई भी निजी वित्तीय जानकारी साझा न करें। किसी भी संदिग्ध लिंक या फर्जी फोन कॉल के झंझरे में न आएं। यदि किसी के साथ साइबर धोखाधड़ी होती है, तो तुरंत साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कराएं।

अपराधियों में डर पैदा करते हैं सीसीटीवी कैमरे

इस मौके पर एसआई ने गांव की सुरक्षा को मजबूत करने और अपराधों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से ग्रामीणों व पंचायत प्रतिनिधियों को गांव के मुख्य रास्तों, चौपालों, एंटी-ध्वजित प्लाईट तथा दुकानों पर ज्यादा से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगाने की अपील की। उन्होंने बताया कि सीसीटीवी कैमरे न केवल अपराधियों में डर पैदा करते हैं, बल्कि किसी भी अप्रिय घटना को सुलझाने में पुलिस के लिए अहम सबूत बनते हैं। उन्होंने ग्रामीणों से अपील करते हुए कहा कि वे गांव में किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत पुलिस को डायल 112 पर दें। इस अवसर पर गांव कंवली के मौजिज लोग, पंचायत प्रतिनिधि और भारी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

विकास नगर की रेखा ने हासिल की पीएचडी की उपाधि

रेवाड़ी। शहर की विकास नगर कॉलेजो निवासी रेखा रानी ने बाबा मस्तनानथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर रोहतक के विज्ञान विभाग के रसायन विज्ञान विषय में सतत कार्बनिक संश्लेषण रणनीतियों पर शोध कर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। रेखा रानी ने अपना शोध कार्य सुपरवाइजर डा. सजनी तथा को-सुपरवाइजर डा. दिनेश कुमार अरिस्टेस्ट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग किशन लाल पब्लिक कॉलेज रेवाड़ी के मार्गदर्शन में पूर्ण किया। रेखा रानी ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, भाई-बहनों व सास-ससुर सहित पूरे परिवार को दिया। रेखा रानी ने विशेष रूप से अपनी बहन पूजा एवं जीजा जय किशन का भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि दोनों ने उनकी शोध यात्रा में निरंतर सहयोग, उत्साहवर्धन और मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने बाबा मस्तनानथ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अरिस्टेस्ट प्रोफेसर डा. बबन शर्मा का भी धन्यवाद किया। रेखा रानी ने कहा कि पीएचडी की यह उपलब्धि उनके लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, लेकिन साथ ही यह आगे भी शोध के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने की नई जिम्मेदारी है।

